ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-1*February- 2018
Innovation The Research Concept

भारतीय लोकतंत्र की समस्याएँ एवं सुझाव

सारांश

लोकतंत्र सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक क्षेत्र की उचित एवं पवित्र अवधारणा है। भारतीय लोकतंत्र दुनिया के विशाल देशों में से एक है। संविधान में इसके बनाये रखने के अनेक उपबन्ध किये हैं। वर्तमान भारतीय लोकतंत्र मूल लक्ष्य से भटकता सा नजर आ रहा है। अनेक समस्याएँ इसको प्रभावित कर रही है। जाति, धर्म, हिंसा, स्वार्थपरिता, भ्रष्टाचार, नक्सलवाद, क्षेत्रवाद, आतंकवाद, धनबल, हिंसा धमकी का सहारा एवं घोटाले आदि अनेक बातें इसे निरन्तर प्रभावित करती रही है। समस्याऐं घटती नहीं है, बढ़ती ही जाती है। जनता असमंजस में बनी रहती है। दलों एवं क्षेत्रीय दलों के प्रचार–प्रसार में यह पहचानना मुस्किल सा हो जाता है कि कौनसा दल सच्चा स्वस्थ लोकतंत्र बनाये रखेगा। सत्ता से बाहर रहने पर कुछ और कहता है, सत्ता में आने पर कुछ और करता है। प्रत्येक राजनीतिक दल की यही स्थिति है। जनता ढगी–ढगी सी महसूस करती है। समस्याओं को दूर करने के लिए कदम उठाने की आवश्यकता है। इसके लिए जनता को जागरूक एवं शिक्षित बनाने की आवश्यकता है तथा राजनीतिक दलों व सत्ताधारियों को इनोवेशन को अपना लक्ष्य बनाना होगा तथा भ्रष्टाचार, घटिया राजनीति, दुष्प्रचार, हिंसा, धनवल, बाहुबल, झूठी चकाचौंद पर प्रतिबन्ध लगाना होगा। प्रत्येक राजनीतिक दल व सरकार को जबावदेह, ईमानदार व पारदर्शी बनना होगा।

मुख्य शब्द : लोकतंत्र, राजनीतिक दल, क्षेत्रवाद, भ्रष्टाचार, स्वतंत्रता, समानता, घोटाले, गठबन्धन, इनोवेशन, जबावदेय, जातीवाद, चुनाव, जागरूकता।

बी.एल. मेनावत
व्याख्याता,
राजनीति विज्ञान विभाग,
राजकीय महाविद्यालय,
उनियारा, टोंक, राजस्थान

प्रस्तावना

लोकतंत्र जनता के लिए, जनता द्वारा, जनता का शासन है, यूनान के नगर राज्यों में शुद्ध एवं प्रत्यक्ष लोकतंत्र था। सभी स्वतंत्र व्यक्ति आम सभाओं में एकत्र होते थे, कानून बनाते और उन्हें अपने ऊपर लागू करते थे। किन्तु वर्तमान में विशाल राज्य बन गये हैं, इसमें सभी व्यक्तियों का एक जगह एकत्र होना असम्भव है। इस कारण अप्रत्यक्ष लोकतंत्र को अपना लिया गया है। लोकतंत्र अपने व्यापक अर्थ में एक राजनीतिक अवस्था, एक नैतिक धारणा और एक सामाजिक परिस्थिति है। लोकतंत्र का मतलब सामान्य मनुष्य में निष्ठा है। लिंडसे के अनुसार लोकतंत्र का अर्थ है कि सभी मनुष्यों का महत्व होता है, कोई भी किसी दूसरे व्यक्ति को अपने उद्देश्य पूर्ति करने का साधन नहीं बनायेगा। लोकतंत्र इस बात की कोशिश करता है कि एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था कायम की जाये जिसमें व्यक्तित्व के विकास और अभिव्यक्ति के लिए अनुकूल अवसर मिल सकें। इसमें जन कल्याण एवं मानव व्यक्तित्व के विकास को सर्वोपरिता दी जाती है।

अध्ययन का उद्देश्य

भारतीय प्रजातन्त्र को विकासोन्मुखी वर्तमान समय के अनुसार आधुनिकीकृत बनाया जाना आवश्यक हो गया है। भारतीय प्रजातन्त्र को नई दिशा दी जाए जिससे भारत विकसित देशों की श्रेणी में आ सके। जनसामान्य के हित साधे जा सके। सच्चे लोकतन्त्र की ओर कदम बढायें।

भारतीय प्रजातन्त्र की समस्यायें

विश्व के विशालतम प्रजातंत्र भारत से अनेक देश प्रजातंत्र व्यवस्था अपनाने की प्रेरणा लेते रहे हैं। आज वही लोकतंत्र असमंजस की स्थिति में है। आज भारतीय जनता का लोकतंत्र के आधार स्तम्भ विधायिका, कार्यपालिका से विश्वास सा उठने लगा है। लोकतंत्र के अनेक नकारात्मक तत्व भारत में पल्लवित हो रहे हैं। जैसे राजनीति का अपराधिकरण, चुनावों में हिंसा, धनबल, गुटबन्दियॉ, भ्रष्टाचार तथा अनैतिकता, स्वार्थपूर्ण क्षेत्रवाद, जातिवाद, क्षेत्रिय दल और इनसे उभरता खंडित जनमत कभी–कभी तानाशाही रूप आदि प्रवृतियां

विकसित हो रही हैं। इनके चलते मानव के व्यक्तित्व विकास एवं मानव कल्याण की कल्पना कैसे की जा सकती है। प्रजातंत्र जो जनता का शासन है जिससे अपेक्षा की जाती है कि जनता के हितों को ध्यान में रखते हुए शासन व्यवस्था संचालित की जाए एवं कुछ मूलभूत आदर्शों एवं सिद्धान्तों का ध्यान रखा जाऐ। जैसे – न्याय, स्वतंत्रता, समानता, भ्रातृत्व, निष्पक्ष चुनाव, लोक कल्याण की भावना का विकास, धर्म निरपेक्षता आदि। क्योंकि लोकतंत्र के द्वारा नैतिकता, ईमानदारी, आत्मनिर्भरता, दृढता और कर्म शक्ति की पूर्ति जनमानस में होनी चाहिए। जिसमें मर्यादित अनुशासित शासन स्थापित हो। प्रजातंत्र सर्वश्रेष्ठ शासन प्रणाली है। हमारे लिए प्रजातंत्र के अलावा और कोई रास्ता नहीं है। भारत की अधिकांश जनसंख्या गावों में निवास करती है। ऐसे में यहॉ लोकतंत्र का महत्व और बढ़ जाता है। सरकार ने अब तक उदार लोकतांत्रिक ढांचे को अपनानकर प्रगतिशील कार्यक्रम अपनाये हैं और आधुनिकीकरण करने का भी प्रयास किया है। किन्तु समयान्तराल के साथ आने वाली विकृतियॉ इस प्रणाली की निष्पक्षता और स्वतंत्रता को संदेह के घेरे में ला खडी कर रही हैं।

वर्तमान में प्रजातांत्रिक व्यवस्था प्रदूषित होती जा रही है। सत्ता पाने के लिए अनेक प्रलोभन दिये जाते हैं जैसे– ऋण माफी, सस्ते खाद्यान्न, मुफ्त जल वितरण, सस्ती बिजली दरें आदि। चुनाव जीतने के लिए काला धन और अपराधी तत्वों का सहारा अपरिहार्य हो गया है तथा महत्वपूर्ण पद प्राप्त करने के लिए अनैतिकता, सिद्धान्त विहीनता, भ्रष्टाचार झूंठा प्रचार–झूंठे वायदे, एक दूसरे पर घटिया स्तर की छींटाकसी आदि का सहारा लिया जाता है। साम्प्रदायिकता, जातीयता, अलगाव, विघटन और घोंटालों जैसी सभी विषमताऍ उभरकर सामने आ रही है, जिससे राजनीतिक सामाजिक एवं आर्थिक विकास का लक्ष्य पूर्ण नहीं हो पा रहा है। आज भी गरीबी, भुखमरी, बीमारियॉ तथा अज्ञानता से अनेक लोग पीडित हैं। ये सभी देश की नीतियों और कार्यक्रमों की उपयुक्तता और प्रभावशीलता पर प्रश्न चिन्ह लगाती हैं। कमजोर वर्ग के लोगों, अल्पसंख्यकों एवं महिलाओं के विरूद्ध अपराध, हिंसा तथा धमकियॉ जैसी कार्यवाहियॉ एक लोक कल्याणकारी राज्य एवं समतावादी समाज बनाने के लिए गहन चुनौती देती हैं। इसके अतिरिक्त निर्वाचन प्रणाली दिनों दिन महंगी होती जा रही है। एक आम चुनाव हेतु अरबों रूपये की व्यवस्था निःसन्देह भारत जैसे विकासशील देश के लिए एक मुश्किल बात है।

राजनीतिक दलों द्वारा धनबल से भ्रष्ट तरीके अपनाये जाते हैं। इसलिए जनता की निष्पक्ष राय कैसे प्राप्त की जाए यह विचारणीय प्रश्न सामने है। राजनीति में भ्रष्टाचार उल्लेखनीय है जिसके कारण बड़े बडे अपराधी राजनीति में पहुॅचकर सत्ता संभालकर संचालित कर रहे हैं। उनसे न्याय एवं लोकहित की अपेक्षा निरर्थक है। भ्रष्टाचार ने अनेक घोटालों को जन्म दिया है जो भारतीय लोकतंत्र के लिए एक प्रश्नचिन्ह है। जिसमें हवाला काण्ड, चारा घोटाला, नरेगा घोटाला, कोयला घोटला, दूरसंचार घोटाला, यूरिया घोटाला, ताज कोरीडोर घोटाला, बैंक घोटाला आदि हैं। इस प्रकार भारतीय लोकतंत्र के समक्ष अनेक चुनौतियॉ व समस्याऍ हैं। यथा–

1. पहले खण्डित जनमत के कारण किसी भी दल को बहुमत नहीं मिल पाता था और अन्ततः गठबन्धन सरकार बनती थी, इससे विधानमंडलों में बहुमत सिद्ध करने के लिए बडी मात्रा में खरीद फरोक्त होती थी। अल्पमत सरकारें प्रभावी तरीके से निर्णय नहीं ले पाती थी। वर्तमान में बहुमत वाली सरकार बन भी जाती है, तो तानाशाही जैसी प्रवृत्ति देखी जा रही है। विकास की बात करने की बजाय पूर्व सरकारों की कमियों के अलाप गाये जाते है। विकास का मुद्दा कहीं दब गया है। जो लोकतंत्र के लिए सही नहीं है।
2. क्षेत्रवाद के अन्तर्गत स्थानीय मुद्दों को हवा दी जाती है और राष्ट्र हितों को भुला दिया जाता है। इसी कारण स्वार्थी लोग अलग राज्य की मांग करके सत्ता में आना चाहते हैं। बोडोलेंण्ड, विदर्भ, विंध्यप्रदेश, महाकौशल, पश्चिमी उत्तरप्रदेश, पूर्वी उत्तर प्रदेश, गोरखालैंण्ड, खालिस्तान की मांगें उठने लगती है।
3. क्षेत्रीय राजनीतिक दलों की भरमार होती जा रही है। क्षेत्र के नाम पर, जाति, धर्म, अगडे, पिछडे के नाम पर स्वार्थ पूर्ति का साधन बनाया जाता है।
4. चुनावों में धन बल–बाहुबल, हिंसा, धमकी का सहारा लिया जाना आम बात है। स्वतंत्र व विवेकपूर्ण तरीके से जन सामान्य मतदान कर ही नहीं पाती है।
5. राजनीति का अपराधीकरण होने के कारण ही भ्रष्टाचार, घोटालों को बढावा मिल रहा है। अपराधी तत्वों पर कोई प्रतिबन्ध नजर नहीं आता है।
6. नक्सलवाद, आतंकवाद, बहुत कुछ असन्तोष के कारण पैदा हो रहा है। जो भारतीय राजनीति को प्रभावित कर रहा है। विकास की रेखा आदिवासी क्षेत्रों में नहीं पहुॅच पा रही है। जो असंतोष पैदा करती है। यदि समय रहते इस ओर ध्यान नहीं दिया गया तो नक्सलवाद धीरे–धीरे सम्पूर्ण भारत में अपने पैर पसार लेगा। जनता का असंतोष कभी–कभी हड़ताल, हिंसा, चक्काजाम, आरक्षण, की मांग किसान आत्महत्या, आदि रूपों में प्रदर्शित होता है।
7. भ्रष्टाचार, घोटाला, काला धन तथा महिला हिंसा आदि बाहें पसार रही हैं। इन्हीं मुद्दों को लेकर दिल्ली में नवीनतम आम आदमी पार्टी को जनता ने जनादेश दे दिया।
8. चुनावों में घटिया स्तर के शब्दों का उपयोग छींटाकसी लोकतंत्र का मखौल उड़ाता है।

सुझाव

लोकतंत्र मूलतः एक नैतिक व्यवस्था है। एक तरीके की जिन्दगी है। इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि उसे उचित और सही तरीके से प्रयोग किया जाए। तभी जन सामान्य एवं देश का सम्पूर्ण विकास किया जा सकता है। जब दिल्ली में आम आदमी पार्टी ने भ्रष्टाचार एवं अपराधी व घोटाला बिरोधी मुहिम छेडी तो जनता का रूख उसकी ओर थोडे ही समय में मुड गया। क्योंकि एक स्वच्छ लोकतंत्र की मांग आम जनता की है। इसके लिए निम्न सुझाव दिये जा सकते हैं :–

1. अपराधियों, भ्रष्टाचार तथा कालाधन को राजनीति से दूर रखा जाए। इसके लिए कठोर उपाय किये जायें।
2. चुनावों में शैक्षणिक योग्यता रखते हुए बुद्धिमान व्यक्तियों को सत्ता तक पहुॅचाने के मानदण्ड रखे जाएॅं।
3. शिक्षा का प्रचार–प्रसार करते हुए जनता को जागरूक बनाया जाए। जनता की जागरूकता ही लोकतंत्र की सफलता है।
4. जबाबदेय, पारदर्शी एवं ईमानदार सरकार बनाने पर जोर दिया जाए।
5. सूचना के अधिकार, निश्चित समय में कार्य योजना तथा संचार क्रान्ति को और अधिक सक्रिय किया जाए। जिससे जन सामान्य भी सही और गलत को आसानी से समझ सके।
6. जनता को शान्तिपूर्ण ढंग से सरकारों को चुनने एवं निष्पक्ष राय देने का अवसर दिया जाये।
7. चुनावों में से अपराधियों को रोकने, हिंसा, धनबल, बाहुबल को रोकने के कठोर प्रतिबन्ध लगाये जायें।
8. देश में स्थिर एवं सुदृढ राजनैतिक वातावरण बनाये जायें जिससे सामाजिक आर्थिक लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके।
9. क्षेत्रीय दलों की भरमार एवं जातीगत राजनीति को सीमित किया जाये।
10. परिवारवाद की राजनीति के स्थान पर योग्य नेतृत्व को बल दिया जाए। चुनावों में निम्न स्तर के शब्दों व आधारहीन आक्षेपों पर प्रतिबन्ध लगाया जाये। झूठें प्रचार को रोका जाये।
11. निर्दलीय उम्मीदवारों की बढ़ती संख्या को रोका जाए क्योंकि चुनावों के बाद स्पष्ट बहुमत न होने पर यही खरीद फरोक्त के कारण बनते हैं। एक उम्मीदवार को एक से अधिक निर्वाचन क्षेत्रों से चुनाव लड़ने पर प्रतिबन्ध लगाया जाये। लोकतन्त्र में मजबूत विपक्ष भी आवश्यक होता है।
12. इनोवेशन को चुनावी ऐजेण्डा में सम्मिलित करने पर बल दिया जाये।

निष्कर्ष

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मतदाताओं में जागरूकता तो बढ़ रही है 2014 के चुनावों से पहले स्पष्ट बहुमत की सरकार के स्थान पर मिली जुली सरकारें निर्मित हो रही थी, जो विकास के प्रभावी कदम उठाने में बाधा थी और किसी प्रकार ढुल मुल नीति अपनाकर अपने पॉच वर्ष पूर्ण करने में लगी रहती थी। क्षेत्रीय दल मनमाने तरीके से अपने क्षेत्रीय हितों के लिए केन्द्रीय सरकार को प्रभावित करते रहते थे। वर्तमान में बहुमत मिल गया है तो तानाशाह जैसा रूप ले लिया है। नवाचार, विकास जनकल्याण पर कोई बात नहीं करता है। यदि विकसित देशों की ओर नजर डालें तो वहां इनोवेशन पर अधिक बल दिया जाता है। जो विकास के लिए नई तकनीक विकसित करती हैं। भारत में राजनीतिक दल अब भी मुफ्त बिजली, सस्ते अनाज, टोल फ्री के रास्ते जैसे दो कोडी के ऐजेण्डे पर वोट मांगते हैं। सत्ताधारी सरकार अधिकतर समय पूर्व सरकार की कमियों पर उन्हें कोसने में निकालती है जबकि होना यह चाहिए कि देष व लोकतन्त्र को आगे ले जाना चाहिए। एक आदर्श लोकतन्त्र की ओर कदम बढाना चाहिए। यदि देश को आगे बढ़ाना है तो नई तकनीकी और इनोवेशन की ओर ध्यान देना होगा तथा मतदाताओं को भी जागरूक करना होगा। सूचना के अधिकार का प्रचार प्रसार और संचार क्रान्ति को अधिक सक्रिय करना होगा। जिससे जन सामान्य भी वास्तविकता को समझ सकें। जो भी सत्ता में हों वो जनसामान्य की आवाज को सुने। यदि शासन ऐसा नहीं करता है तो जागरूक जनता अपनी ताकत भी बता दे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *आशीर्वादम –''राजनीति विज्ञान'', एस. चॉद एण्ड कम्पनी, नई दिल्ली।*
2. *डॉ. पुखराज जैन – ''भारतीय राजव्यवस्था'', साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा।*
3. *डॉ. बी.एल. फडिया – ''राजनीति के मूल आधार'', कॉलेज बुक डिपो जयपुर।*
4. *डॉ. राजेश जैन – ''भारतीय राजनीति के नये आयाम'', कॉलेज बुक डिपो जयपुर।*
5. *मानचन्द खण्डेला – ''भारतीय राजनीति का भविष्य'', अरिहंत पब्लिकेशन्स, जयपुर।*
6. *मानचन्द खण्डेला – ''भारतीय राजनीति का बदलता परिदृश्य'', आविष्कार पब्लिशर्स, जयपुर।*
7. *सुशमा यादव – ''भारती राजनीति ज्वलंत प्रश्न'', हिन्दी मा.का.निदेशालय, दिल्ली*
8. *विभिन्न – पत्र–पत्रिकाएॅं एवं समाचार पत्र*